IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 12, Issue 1, December 2019
Impact Factor: 4.819

अंग्रेजों की भारत विजय में सहायक पारिस्थितिक घटक- राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक सन्दर्भ में

डॉ. रजत गंगवार,

असि. प्रोफेसर (इतिहास),

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उ०प्र०

rajatgangwar4289@gmail.com

शोध सारांश

1707 **में मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद से ही मुग़ल सत्ता का पतन प्रारंभ हो गया था परंतु बाद में उत्तराधिकार के लिए परस्पर संघर्षों ने उसे और अधिक धराशायी कर दिया। इसी समय नादिरशाह एवं अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों ने उसे और जर्जर बना दिया। मुगलों का आधिपत्य कुछ ही क्षेत्र में शेष रह गया था। दिल्ली का मुगल दरबार षड्यंत्र का केंद्र बना हुआ था। खालसा भूमि में कटौती, जागीर संकट, आंकलित भू राजस्व प्राप्त न हो पाना आदि कारणों से न ही मुग़ल सैन्य एवं प्रशासनिक नियंत्रण रख सके, न ही बढ़ते हुए अंग्रेजों के संकट की ओर देख सके। ऐसी विषम स्थिति में आगे चलकर मुगल अंग्रेजों का चाहते हुए भी कोई प्रतिरोध नहीं कर सके थे। यद्यपि अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे। जिस प्रकार अन्य यूरोपीय शक्तियों डच, पुर्तगाली, फ्रेंच आए थे। उनका मुख्य उद्देश्य भारत से अत्यधिक धन कमाकर ब्रिटेन ले जाना था। परंतु जब उन्होंने देखा कि मुक्त एवं अवरोधक व्यापार के लिए राजनैतिक नियन्त्रण एवं राजनीतिक सत्ता अपने हाथों में लेना अनिवार्य है और समकालीन राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति उनके अनुकूल थी, अत: उन्होंने राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के प्रयत्न प्रारंभ कर दिए और वे भारत के भाग्य विधाता बन बैठे।प्रस्तुत शोधपत्र अंग्रेजों की भारत विजय में सहायक उन पारिस्थितिक**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 12, Issue 1, December 2019
Impact Factor: 4.819

घटकों का विश्लेषण करता है जो राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक आयामों में विद्यमान थे। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भारत आगमन से लेकर 1857 के विद्रोह तक, लगभग ढाई सौ वर्षों की अवधि में भारत धीरे-धीरे ब्रिटिश साम्राज्य की परिधि में आता गया। इस प्रक्रिया में भारत की आन्तरिक दुर्बलताएँ उतनी ही उत्तरदायी थीं जितनी अंग्रेजों की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षा एवं संगठन-शक्ति। शोधपत्र में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि मुगल साम्राज्य के पतन के उपरान्त उत्पन्न राजनीतिक शून्यता, मराठा, राजपूत, सिक्ख एवं अन्य क्षेत्रीय शक्तियों की पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता, जाति-व्यवस्था की कठोरता, धार्मिक विभाजन, आर्थिक संसाधनों का बाह्य-प्रवाह, और तकनीकी-सैन्य असमानता—ये सभी घटक सम्मिलित रूप से अंग्रेजी साम्राज्य-स्थापना की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं।

कुंजी शब्द - ईस्ट इंडिया कंपनी, स्थानीय शक्तियां, राष्ट्रीय चेतना, गुणवत्ता, राजनीतिक हित, सामुद्रिक नियंत्रण, व्यापारिक गतिविधियां, निज़ामत, संधि, दीवानी, संरक्षित रियासत, बफर स्टेट, सामरिक सुरक्षा, व्यपगत सिद्धांत, सहायक संधि, परस्पर वैमनस्यता, फूट डालो एवं राज करो, ब्रिटिश साम्राज्य